Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



कक्षा – 9

हिन्दी

क्षितिज (गद्य खंड)

अध्याय–3 : उपभोक्ता की संस्कृति (श्यामाचरण दुबे)

भाग – 2

कुशाल सोलंकी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

विवरण (Overview)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



1. लेखक परिचय
2. उपभोक्ता की संस्कृति

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



भारत में तो यह स्थिति अभी नहीं आई पर अमरीका और यूरोप के कुछ देशों में आप मरने के पहले ही अपने अंतिम संस्कार और अनंत विश्राम का प्रबंध भी कर सकते हैं-एक कीमत पर। आपकी कब्र के आसपास सदा हरी घास होगी, मनचाहे फूल होंगे। चाहें तो वहाँ फव्वारे होंगे और मंद ध्वनि में निरंतर संगीत भी। कल भारत में भी यह संभव हो सकता है।

अनंत – जिसका अंत न हो

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

अमरीका में आज जो हो रहा है, कल वह भारत में भी आ सकता है। प्रतिष्ठा के अनेक रूप होते हैं। चाहे वे हास्यास्पद ही क्यों न हों। यह है एक छोटी-सी झलक उपभोक्तावादी समाज की। यह विशिष्टजन का समाज है पर सामान्यजन भी इसे ललचाई निगाहों से देखते हैं। उनकी दृष्टि में, एक विज्ञापन की भाषा में, यही है राइट च्वाइस बेबी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अब विषय के गंभीर पक्ष की ओर आएँ। इस उपभोक्ता संस्कृति का विकास भारत में क्यों हो रहा है?

सामंती संस्कृति के तत्व भारत में पहले भी रहे हैं। उपभोक्तावाद इस संस्कृति से जुड़ा रहा है। आज सामंत बदल गए हैं, सामंती संस्कृति का मुहावरा बदल गया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



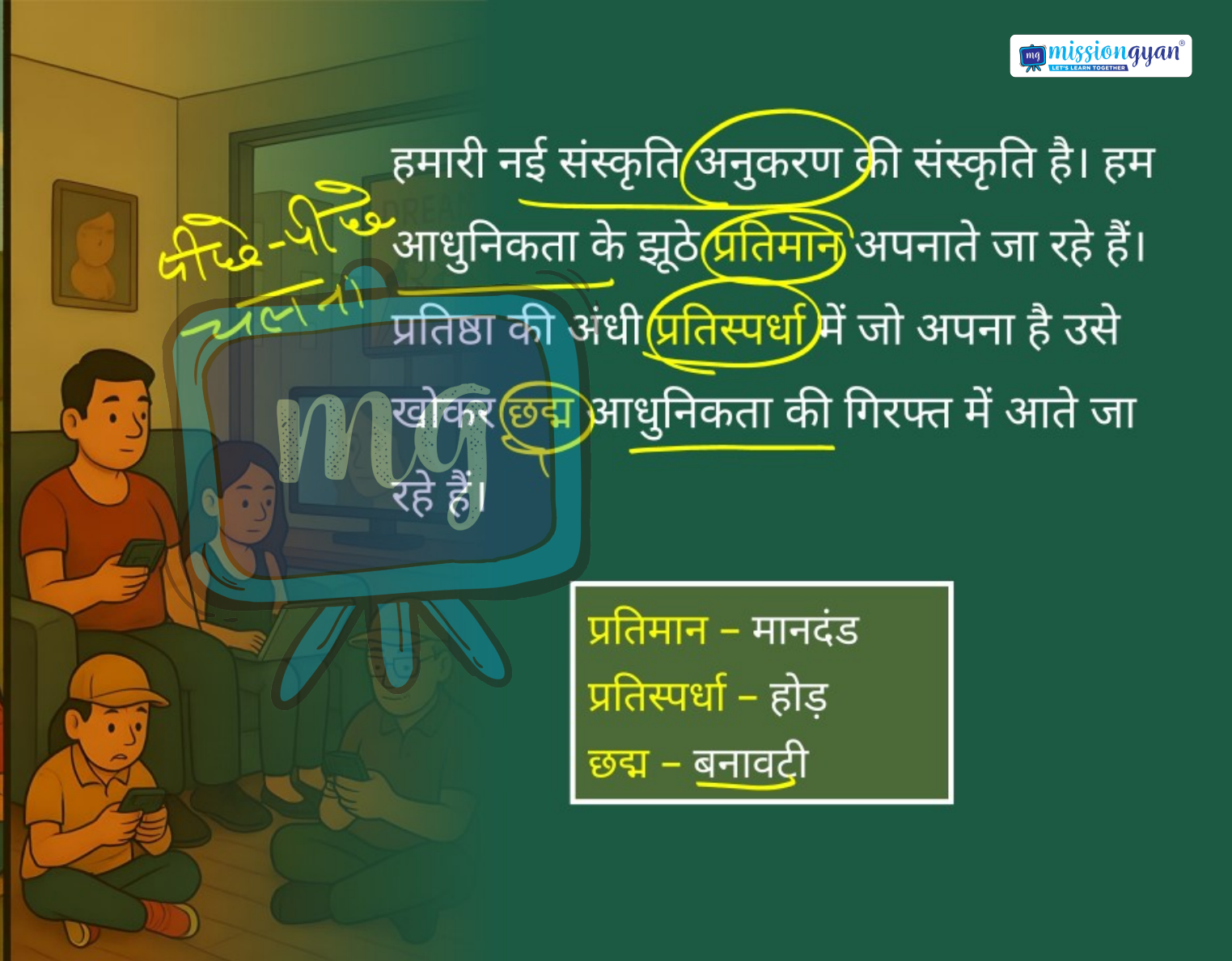
हम सांस्कृतिक अस्मिता की बात कितनी ही करें; परंपराओं का अवमूल्यन हुआ है, आस्थाओं का क्षरण हुआ है। कड़वा सच तो यह है कि हम बौद्धिक दासता स्वीकार कर रहे हैं, पश्चिम के सांस्कृतिक उपनिवेश बन रहे हैं।

अस्मिता – अस्तित्व, पहचान
अवमूल्यन – मूल्य गिरा देना
क्षरण – नाश
उपनिवेश – वह विजित देश जिसमें विजेता राष्ट्र के लोग आकर बस गए हों

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER





हमारी नई संस्कृति अनुकरण की संस्कृति है। हम आधुनिकता के झूठे प्रतिमान अपनाते जा रहे हैं। प्रतिष्ठा की अंधी प्रतिस्पर्धा में जो अपना है उसे खोकर छद्म आधुनिकता की गिरफ्त में आते जा रहे हैं।

प्रतिमान – मानदंड
प्रतिस्पर्धा – होड़
छद्म – बनावटी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



संस्कृति की नियंत्रक शक्तियों के क्षीण हो जाने के कारण हम दिग्भ्रमित हो रहे हैं। हमारा समाज ही अन्य निर्देशित होता जा रहा है। विज्ञापन और प्रसार के सूक्ष्म तंत्र हमारी मानसिकता बदल रहे हैं। उनमें सम्मोहन की शक्ति है, वशीकरण की भी। अंततः इस संस्कृति के फैलाव का परिणाम क्या होगा? यह गंभीर चिंता का विषय है।

दिग्भ्रमित – रास्टे से भटकना, दिशाहीन
वशीकरण – वश में करना

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



हमारे सीमित संसाधनों का घोर अपव्यय हो रहा है। जीवन की गुणवत्ता आलू के चिप्स से नहीं सुधरती। न बहुविज्ञापित शीतल पेयों से। भले ही वे अंतर्राष्ट्रीय हों। पीज़ा और बर्गर कितने ही आधुनिक हों, हैं वे कूड़ा खाद्य। समाज में वर्गों की दूरी बढ़ रही है, सामाजिक सरोकारों में कमी आ रही है। जीवन स्तर का यह बढ़ता अंतर आक्रोश और अशांति को जन्म दे रहा है।

अपव्यय – फ़िजूलखर्ची

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



जैसे-जैसे दिखावे की यह संस्कृति फैलेगी, सामाजिक अशांति भी बढ़ेगी। हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास तो हो ही रहा है, हम लक्ष्य-भ्रम से भी पीड़ित हैं। विकास के विराट उद्देश्य पीछे हट रहे हैं, हम झूठी तुष्टि के तात्कालिक लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं। मर्यादाएँ टूट रही हैं, नैतिक मानदंड ढीले पड़ रहे हैं।

तात्कालिक – उसी समय का

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

व्यक्ति केंद्रकता बढ़ रही है, स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा है। भोग की आकांक्षाएँ आसमान को छू रही हैं। किस बिंदु पर रुकेगी यह दौड़?

गांधी जी ने कहा था कि हम स्वस्थ सांस्कृतिक प्रभावों के लिए अपने दरवाज़े-खिड़की खुले रखें पर अपनी बुनियाद पर कायम रहें। उपभोक्ता संस्कृति हमारी सामाजिक नींव को ही हिला रही है। यह एक बड़ा खतरा है। भविष्य के लिए यह एक बड़ी चुनौती है।

परमार्थ – दूसरों की भलाई का

Under CSR Support by ipca | Foundation

सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)

missiongyan



Under CSR Support by
ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



1 उपभोक्ता संस्कृति का सबसे बड़ा खतरा क्या बताया गया है?

अ आर्थिक विकास में बाधा

ब पारिवारिक विघटन

स विदेशी वस्तुओं की कमी

द इनमें से कोई नहीं

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



2 भारत में उपभोक्ता संस्कृति के विकास का मुख्य कारण क्या है?

अ आर्थिक प्रगति

ब विदेशी निवेश

स सांस्कृतिक अनुकरण और बौद्धिक दासता

द शिक्षा का प्रसार

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



3 अमेरिका में आज क्या हो रहा है?

अ अपराध

ब सुख-साधनों की तलाश

स पागलपन का व्यवहार

द अपने अंतिम संस्कार का जीते-जी प्रबंध

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



4 हमारे समाज को कौन चला रहा है?

अ पश्चिमी अंधानुकरण

ब पश्चिमी संस्कृति

स अन्य समाज

द ✓ विज्ञापन और प्रसार माध्यम

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



5 'हम लक्ष्य-भ्रम से पीड़ित हैं' कथन का अर्थ क्या है?

अ हमें अपने भविष्य की योजनाओं की जानकारी है

ब हम अपने लक्ष्य स्पष्ट रूप से निर्धारित कर चुके हैं

स हम भ्रमित हैं और सतही लक्ष्यों के पीछे भाग रहे हैं

द हमारा ध्यान केवल धार्मिक कार्यों पर है